विभक्तियाँ

कारक कि विभिन्न चिन्हों का सम्भाषण में शब्दों में विभक्ति जोड़कर कर्ता के साथ सम्बन्ध ज्ञात होता है। विभक्तियों कोध्यान में रखें विना कर्ता की अभीष्ट प्राप्ति नहीं हो सकती।विभक्ति ज्ञापक के बिना वाक्य रचना भी सम्भव नहीं है। विभक्तियों के सात भेद होते हैं।

1. प्रथम विभक्ति : कर्तृवाच्य में कर्ता प्रथम विभक्ति होती है।
2. द्वितीया विभक्ति : कर्म कारक की द्वितीय विभक्ति होती है।
3. तृतीया विभिक्ति : करण कारक की तृतीया विभक्ति होती है।
4. चतुर्थी विभक्ति : सम्प्रदान कारक की चथुर्थी विभक्ति होती है। 'दा' धातु (देने के अर्थ में) के योग से चथुर्थी विभक्ति होती है।
5. पंचमी विभक्ति : अपादान कारक की पंचमी विभक्ति होती है।
6. षष्ठी विभक्ति : यह सम्बन्ध सूचक हैं।
7. सप्तमी विभक्ति : अधिकरण कारक की सप्तमी विभक्ति होती है।

अजन्त, हलन्त शब्द और लिंग ज्ञान

स्वरान्त या अजन्त शब्द : वे शब्द जिनके अन्त में स्वर होजैसे : देव, फल, लता आदि।

व्यंजनात् या हलन्त शब्द : वे शब्द जिनके अन्त में व्यंजन हो जैसे : राजन्, बलवत् आदि।

संस्कृत भाषा में तीन लिंग होते है। यथा :

स्वरान्त शब्द :

पुर्लिंग शब्द : देव, मुनि, साधु।

स्त्रीलिंग शब्द : लता, रमा, नदी।

नपुंसक लिंग शब्द : फल, वारि, मधु।

व्यंजनान्तशब्द :

पुर्लिंग शब्द : मरुत्, चन्द्रमस्, राजन्।

स्त्रीलिंग शब्द : सरित्, दिक्, वाच्।

नपुंसक लिंग शब्द : जगत्, मनस्, नामन्।

पुरुष

तीन भेद होते हैं–

1. प्रथम पुरुष : वक्ता अर्थात् बोलने वाला।
2. मध्यम पुरुष : श्रोता अर्थात् सुनने वाला।
3. उत्तम पुरुष : जिसके विषय में चर्चा हो रही हैं, परन्तु वह वहां पर उपस्थिति नहीं है।

छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर
आरोह तमसो ज्योति
CHHATRAPATI SHAHU JI MAHARAJ UNIVERSITY KANPUR

THANKS